जालन्धरपीठ-द्वारपाल विमर्श

- राजीव कुमार त्रिगर्ती©

rajeevtrigarti@gmail.com

की-वर्ड्स – Jalandhar: the histrorical place of India. Sacred places of India. Jalandhar in *Pauranic* literature.

सार संक्षेप

जालन्धर-पीठ प्राचीन भारत के ऐतिहासिक, पौराणिक, सांस्कृतिक तथा राजनैतिक स्थलों में से एक और अन्यतम है। संस्कृत-साहित्य में बहुधा इसके उल्लेख और सन्दर्भ प्रस्तुत हुआ करते हैं। किन्तु इस स्थान का ऐतिहासिक दृष्टि से भौगोलिक निर्धारण बहुत ही श्रमसाध्य और दुरूह कार्य है। भौगोलिक कोशों की सहायता के बावजूद इस स्थान का इदमित्त्थं निर्धारण प्राय: नहीं किया जा सकता। विद्वान् लेखक ने सम्बन्धित तथा स्थानीय इतिहास-ग्रन्थों की सहायता से इस विषय पर प्रामाणिक विवेचन प्रस्तुत किया है।

प्राचीनकाल से ही जालन्धरपीठ का अपना एक महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। जालन्धरमाहात्म्य, जालन्धरपुराण, जालन्धरोपाख्यान आदि ग्रंथों में जालन्धरपीठ के माहात्म्य का विद वर्णन प्राप्त होता है – **"वक्षो निपतितं यत्र जातं पीठं महाद्भुतम्" (मेरुतन्त्र-८७४)** अर्थात् युद्ध के समय जिस क्षेत्र में जालन्धर का वक्ष गिरा था यह वही अद्भुतपीठ है। 'जालन्धरपीठदीपिका' में जालन्धरपीठ को प्रदर्शित करते हुए कहा गया है- 'यह विष्टि जालन्धरपीठ व्यास नदी के उस पार से लेकर हिमालय-पर्वत पर्यन्त विस्तृत है। सर्वसम्मति से यह क्षेत्र कल्याणकारी है और यह सम्पूर्ण जालन्धर क्षेत्र सब प्रकार की सिद्धियों को प्रदान करने वाला है।'[1] 'इस जालन्धरपीठ का क्षेत्र द्वाद-योजन में फैला हुआ है।'[2] स्वामी तारानन्द ने 'जालन्धरपीठप्रदर्शक' में 'जालन्धरमाहात्म्य' से प्रमाण उपस्थित करते हुए व्यास नदी के इस पार हिमालय पर्यन्त बारह योजन (४८ कोश) सर्वमान्य जालन्धरपीठ कहा है –

विपाशा परपारं तु योजनंद्वादावधि। हिमालयमभिव्याप्य तत्क्षेत्रं सर्वसम्मतम्।।

© ग्राम-लंघू, पोस्ट-गाँधीग्राम, वाया-बैजनाथ, जिला-काँगड़ा, हिमाचल प्रदेश, भारत.

[1] विपाशा परपारं तु समारभ्य विशिष्टकम्।। प्रथमप्रकाश-१८.
हिमाचलावधि स्वस्तिक्षेत्रं तत्सर्वसम्मतम्।
जालन्धराभिदं सर्वसिद्धीनां निलयं सदा।। प्रथमप्रकाश-१९.

[2] पीठं जालन्धरं पुण्यं योजनं द्वादशं मितम्। प्रथमप्रकाश-२४.

इस स्थल के धार्मिक महत्त्व को अनेक स्थलों पर स्वीकारा गया है। 'सभी पाठों में यह जालन्धरपीठ सर्वोत्तम है। अन्य तीर्थों की वर्ष भर यात्रा करने से जितना पुण्यार्जन होता है उतना तो यहाँ मात्र एक दिन की यात्रा से ही मिल जाता है।'[3] पौराणिक कथानकों के अनुसार यह भूमि जालन्धर की तपस्थली है।[4]

पृथुनाथास्त्री इस क्षेत्र के प्राचीन और अद्यावधि प्रचलित नामों को राजनीतिक और धार्मिक महत्ता का विवरण प्रस्तुत करते हुए लिखते हैं - आदिकाल में राजनीतिक दृष्टि से इस प्रदेश का नाम जालन्धर क्षेत्र, धार्मिक दृष्टि से जालन्धरपीठ, महाभारतकाल में त्रिगर्त, सुर्मपुर और जालन्धर क्षेत्र रहा है और अर्वाचीन काल में नगरकोट, भीमकोट आदि भले ही अनेक नाम मिलते हैं पर काँगड़ा नाम लोकमानस से कभी भी ओझल नहीं रहा है। काँगड़ा नाम एक ऐतिहासिक नाम है और इसकी ऐतिहासिकता का ज्ञान एक प्राचीन हस्तलेख से हुआ है। इसमें कांगड़ा नाम का निर्वचन, सीमा तथा गुण आदि का वर्णन भी है।[5]

चौसठ-पीठों में जालन्धर-महापीठ सर्वोत्तम है, आकार इसका धनुष के समान है और बारह योजन तक इसका विस्तार है। कामरूपिणी और तेजोमयी महादेवी इस सारे पीठ में व्याप्त है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार जो मनुष्य उन-उन स्थानों में जाकर देवताओं और तीर्थों के दर्शन करता है, वह संसार के बंधनों से मुक्त होकर पुण्यों से प्राप्त होने वाले लोकों को पाता है। इस पीठ के सम्बन्ध में शिव जी ने यह बात कही है तथा अन्यत्र भी इसके प्रमाण मिलते हैं।[6]

पुराणप्रसिद्ध चरित्र दैत्यराज जालन्धर से सम्बधित इस क्षेत्र के अनेक देवस्थल हैं। शैव और शाक्तमत के प्रचार के कारण यहाँ अनेक शक्तिपीठ हैं। तन्त्राशास्त्र में जालन्धरपीठ का अपना विशिष्ट महत्त्व है। इस जालन्धरपीठ का आध्यात्मिक और तान्त्रिक दृष्टिकोण से भी अपना विषेश महत्त्व है। इस पीठ के द्वारों तथा बिन्दु स्थान के सन्दर्भ में जालन्धरपीठदीपिकाकार ने इस प्रकार लिखा है – 'यह जालन्धरपीठ चार द्वारों से युक्त है और महादेवी के यन्त्रस्वरूप में है। इसके बिन्दु स्थान पर भगवती वज्रेश्वरी प्रतिष्ठित है। इस पीठ की तीन बार

---

[3] क्षेत्राणामेव सर्वेषां मध्ये क्षेत्रमिदं शुभं।
वर्तते चान्यतीर्थेषु वर्णमात्रेण यद्भ्रवेत्।।
तदत्र दिनमात्रेण जायते नास्ति संशयः। जालन्धरपुराणम्, अध्याय-१५/८१-८२.

[4] जलन्धराभिधो दैत्यः संस्थितः पावनः स्वयम्।।
तपसा तेन संतोष्य नारायणमकल्मङ्गम्। जालन्धरपुराणम्, अध्याय-१५/८७-८८.

[5] जालन्धरपीठदीपिका, (पूर्वपीठिका), पृथूनाथ शास्त्री, पृष्ठ-९.

[6] जालन्धरे महापीठे चतुःशष्ट्युत्तमोत्तमे।
धनुषाकारसम्प्राप्ते द्वादशाख्यं च यौजनम्।।
व्याप्य तेजोमयीदेवी राजते कामरूपिणी।
तत्र गत्वा नर-श्रेष्ठो देवादितीर्थदर्शनात्।।
प्राप्यपुण्यकृताल्लोकान् मुच्यते भवबन्धनात्।
तथा विवचश्चान्यद् वर्तते पीठवर्णने।। जालन्धरपीठदीपिका, प्रथमप्रकाशः, २२-२४.

परिक्रमा करना कल्याण कारक है। इसके दक्षिण द्वार पर कालेश्वर, पश्चिम द्वार पर करवीरेश्वर, उत्तर द्वार पर नन्दिकेश्वर तथा पूर्व द्वार पर उसके रक्षक कुंजेश्वर महादेव विराजमान हैं।'[7]

यात्रा-क्रम में यात्रा का प्रारम्भ दक्षिण के द्वारपाल व्यास नदी के तट पर स्थित कालेश्वर महादेव से होता है।[8] यात्रामार्ग के देवस्थलों के दर्शन के उपरान्त पश्चिम के द्वारपाल करवीरेश्वर जाने का विवरण है।[9] इसी क्रम में तीसरे द्वारपाल के दर्शनों के रूप में उत्तर-द्वार के द्वारपाल नन्दिकेश्वर का उल्लेख है।[10] पूर्वद्वार के रक्षक कुंजेश्वर महादेव के दर्शन का विधान पाँचवें प्रकाश में आया है।

'जालन्धरपुराण' के पन्द्रहवें अध्याय में भी दक्षिण-द्वार के द्वारपाल कालेश्वर महादेव को, उत्तर-द्वार के द्वारपाल नन्दिकेश्वर को, पश्चिमद्वार के द्वारपाल कुंजेश्वर और महाकाल को पूर्व के द्वार का द्वारपाल कहा गया है।[11] 'जालन्धरपीठ-प्रर्दक' में स्वामी तारानन्द ने जो मत प्रस्तुत किया है वह इन दोनों मतों से हटकर है और ज्यादा उपयुक्त भी है। इनके अनुसार – 'जालन्धरपीठ के चार ही द्वारपाल हैं, जैसे पूर्व के महाकाल, दक्षिण के कालेश्वर, पश्चिम के करवीरेश्वर और उत्तर के नन्दिकेश्वर।'[12]

---

[7] जालन्धरं महापीठं चतुर्द्वारसमन्वितम्।
यन्त्ररूपं महादेव्या बिन्दौ वज्रेश्वरी सदा।।
वृत्तित्रयेण पीठस्य क्रमणंभशुभदं भवेत्।
पीठस्य दक्षिणद्वारि कालेश्वरः महाविः।।
पश्चिम-द्वारशोभाढ्यः करवीरेश्वरो विभुः।
उत्तर-द्वारपालो नन्दिकेश्वर ईरितः।।
पूर्व कुजद्वारपालस्तु कुञजेश्वर ईरितः। जालन्धरपीठदीपिका प्रथमप्रकाश, २९-३२.

[8] इन्द्रादिददिक्पालान्सायुधान्भूपुरेऽर्चयेत्।।
तत्रादौ दक्षिणद्वारमारभ्य क्रमणं चरेत्। जालन्धरपीठदीपिका प्रथमप्रकाश, ३२-३३.

[9] ततो गच्छेन् महाक्षेत्रं करवीराभिधं परम्।
ष्श्चिमद्वारमाख्यातं पीठं जालन्धरस्य च।। जालन्धरपीठदीपिका तृतीयप्रकाश-१.

[10] ततो गच्छेन्नन्दिकें मंत्र-सिद्धि-द्रुत-प्रदम्।
उत्तर-द्वारपालें सगणं सायुधं यजेत्।। जालन्धरपीठदीपिका चतुर्थप्रकाश-१.

[11] दक्षिणं यस्य क्षेत्रस्य द्वारं कालेश्वरो गणः।। जालन्धरपुराण, अध्याय-१५, श्लोक-९०.
नन्दिकेश्वर संज्ञो वै यस्य क्षेत्रस्य चोत्तरे।। जालन्धरपुराण, अध्याय-१५, श्लोक-९१.
पश्चिम-द्वार-दो तु यस्य क्षेत्रस्य तिष्ठति।।
व्यस्तुगणः कुञजद्वारे श्रीमांश्च राजते प्रियः।
पूर्वद्वारं समाश्रित्य महाकालाभिधौ गणः।। जालन्धरपुराण, अध्याय-१५, श्लोक-९२-९३.

[12] जालन्धरपीठ प्रर्दक, पृष्ठ -10

'जालन्धरपीठदीपिका'-कार द्वारा प्रस्तुत द्वारपाल-क्रम यात्रा मार्ग के अनुकूल है और वे यात्रा-मार्ग के अनुसार ही दक्षिण, पश्चिम, उत्तर से होते हुए पूर्व की ओर आए हैं। 'जालन्धरपुराण' में यह क्रम दक्षिण से प्रारम्भ होकर उत्तर में आया है और फिर पश्चिम होते हुए पूर्व में पहुँचा है। 'जालन्धरपथप्रर्दक' में सबसे पहले पूर्व के द्वारपाल का उल्लेख हुआ है जबकि यात्रा मार्ग के क्रम के अनुसार इसका उल्लेख सबसे अन्त में है। इसके उपरान्त दक्षिण, पश्चिम और उत्तर का उल्लेख है।

'जालन्धरपुराण' में शिवजी द्वारा देवताओं को जालन्धरपीठ की यात्रा के सम्बन्ध में बताकर, यात्रा की निर्विघ्न समाप्ति हेतु द्वारपालों की पूजा के सन्दर्भ में बताया है। शिवजी द्वारा पीठ की यात्रा के आदे को पाकर देवताओं ने सर्वप्रथम महाकाल द्वारपाल की पूजा की। इसके उपरान्त दक्षिण के द्वारपाल कालेश्वर की पूजा की फिर पश्चिम के द्वारपाल कुंजेश्वर और अन्त में उत्तर के द्वारपाल नन्दिकेश्वर की पूजा की।[13] यहाँ सर्वप्रथम महाकाल की पूजा हुई इस आधार पर स्वामी तारानन्द द्वारा 'जालन्धरपथप्रर्दक' में सर्वप्रथम पूर्व के द्वारपाल महाकाल का उल्लेख करना और बाद में दक्षिण, पश्चिम और उत्तर के द्वारपालों का उल्लेख युक्तिसंगत ही है।

परिक्रमण क्रम को छोड़ दें तो इन तीनों स्थलों पर दक्षिण के द्वारपाल के रूप में कालेश्वर को ही निरूपित किया गया है और उत्तर के द्वारपाल के रूप में तीनों स्थलों पर नन्दिकेश्वर को ही प्रदर्शित किया गया है। अतः इन जालन्धरपीठ के इन दोनों द्वारपालों के सम्बन्ध में किसी प्रकार का मतभेद नहीं है। इसके विपरीत पश्चिम और पूर्व के द्वारपालों के सन्दर्भ में मतैक्य नहीं है। 'जालन्धरपुराण' में पश्चिम-द्वार के द्वारपाल के रूप में कुञजेश्वर का उल्लेख है जबकि 'जालन्धरपीठदीपिका' और 'जालन्धरपथप्रर्दक' में पचिम द्वार के द्वारपाल के रूप में करवीरेवर का उल्लेख है। इस प्रकार से ही पूर्व-द्वार के द्वारपाल के रूप में 'जालन्धरपुराण' में तथा 'जालन्धरपथप्रर्दाक' में एकरूपता है। इन दोनों स्थलों पर महाकाल को पूर्व द्वार का द्वारपाल बताया गया है जबकि इसके विपरीत 'जालन्धरपीठदीपिका' में कुंजेश्वर को पूर्व द्वार का द्वारपाल बताया गया है।

सर्वप्रथम पूर्व के द्वार को ही लें तो महाकाल और कुंजेश्वर दोनों ही जालन्धरपीठ की पूर्व दिशा में हैं। कुंजेश्वर को कुंजद्वार के नाम से भी अभिहित किया जाता है। यह नामकरण 'जालन्धरपीठदीपिका' के प्रभाव के चलते ही प्रचलित हुआ होगा। तथापि दोनों स्थलों को यदि तुलनात्मक रूप से देखा जाए तो कुंजेश्वर की अपेक्षा महाकाल की स्थिति अधिक पूर्व में है। अतःमहाकाल को पूर्व का द्वारपाल स्वीकार करना अधिक युक्तियुक्त है। 'जालन्धरपथप्रर्दक' का उपजीव्य 'जालन्धरपीठदीपिका' होने पर भी यहाँ पर दोनों का मतभेद है और स्वामी तारानन्द द्वारा 'जालन्धरपुराण' का समर्थन करना यहाँ उचित प्रतीत होता है।

पश्चिम द्वार के सन्दर्भ में 'जालन्धरपीठदीपिका' के अनुसार ही 'जालन्धरपथप्रर्दक' में करवीरेश्वर को पश्चिम द्वार का द्वारपाल बताया गया है। 'जालन्धरपुराण' में पश्चिम द्वार के द्वारपाल के रूप में कुंजेश्वर का उल्लेख करना भ्रमित करने वाला है क्योंकि कुंजेश्वर की स्थिति पूर्व में है और करवीरेश्वर का पश्चिम में द्वारपाल के रूप में उल्लेख करने वाला 'जालन्धरपीठदीपिका' का मत अधिक उपयुक्त है। 'जालन्धरपुराण' में उपलब्ध

[13] जालन्धरपुराण, अध्याय-१५, श्लोक १००-११०.

कुंजेश्वर यहाँ पश्चिम के द्वारपाल के रूप में उचित प्रतीत नहीं होता। इस तरह ही त्रुटि का आधान जालन्धर पुराण में किस कारण से उपलब्ध होता है? इतना अधिक दिग्भ्रम कैसे हो सकता है? पूर्व का पश्चिम कैसे हो सकता है? इस सन्दर्भ में किसी भी निष्कर्ष से पूर्व एकमात्र विचारणीय विषय यही है कि क्या 'जालन्धरपुराण' की रचना के समय पश्चिम के किसी अन्य स्थल को तो कुंजेश्वर के नाम से नहीं जाना जाता था? कालान्तर में यह स्थान किन्ही प्राकृतिक या अन्य कारणों से विलुप्त हो गया हो और फिर इसकी स्थिति को पूर्व में मान लिया गया हो और इसी कारण से 'जालन्धरपीठदीपिका' में कुंजेश्वर को पूर्व के द्वारपाल के रूप में प्रस्तुत किया गया हो।

इस तरह की स्थिति का उत्पन्न होना इतना सहज नहीं है अतः इसे 'जालन्धरपुराण' की त्रुटि ही माना जा सकता है। प्रस्तुत सरणि में द्वारपालों की स्थिति को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	पूर्व
जालन्धरपुराण	कालेश्वर	कुञ्जेश्वर	नन्दिकेश्वर	महाकाल
जालन्धरपीठदीपिका	कालेश्वर	करवीरेश्वर	नन्दिकेश्वर	कुञ्जेश्वर
जालन्धरपथप्रदर्शक	कालेश्वर	करवीरेश्वर	नन्दिकेश्वर	महाकाल

इन चारों स्थलों की भौगोलिक स्थिति को देखते हुए सबसे अर्वाचीन स्वामीतारानन्द का मत ही अधिक उपयुक्त प्रतीत होता है। स्वामीतारानन्द ने 'जालन्धरपुराण' और 'जालन्धरपीठदीपिका' के विद अध्ययन के उपरान्त इन स्थलों की भौगोलिक स्थिति को देखते हुए दोनों ही मतों में जहाँ त्रुटि प्रतीत हुई उस पक्ष को छोड़कर वस्तुस्थिति को प्रस्तुत किया। उपर्युक्त सरणि में तीनों पक्षों को प्रस्तुत किया गया है जिनमें से 'जालन्धरपथप्रर्दक' का मत भौगोलिक दृष्टिकोण से अधिक उपयुक्त है।

☯

सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची

१. प्रह्लादानन्दाचार्य कुलावधूतकृत, पृथुराम शास्त्री (संपादक एवं अनुवादक), जालन्धरपीठदीपिका, प्रथम संस्करण 1983 ई., निर्मल प्रकाशन, तुलसी सदन, वसदी, कोहाला, काँगड़ा, हिमाचल प्रदेश.

२. स्वामी तारानन्द (संग्रहकर्ता), जालन्धरपीठ प्रदर्शक, प्रथम संस्करण सम्वत् 1993 विक्रमी, श्री तारिणी संस्कृत पाठशाला, त्रिगर्त विद्यापीठ, तारापुर-बैजनाथ, काँगड़ा।

३. पृथुराम शास्त्री (अनुवादक), जालन्धरपुराण, प्रथम संस्करण 2003 ई., हिमाचल कला संस्कृति भाषा अकादमी, शिमला.